कृषि लोक
कृषि एवं किसान के लिए ई-पत्रिका
http://www.rdagriculture.in
e-ISSN No. 2583-0937
कृषि लोक,खंड 03 (02): 58-59, 2023

खरीफ की फसलों से अधिक उत्पादन कैसे करें

डॉ. राम नरेश[1], कमलकांत यादव[2] और यतेंद्र सिंह[3]

भा. कृ. अनु. परि. अटारी, कानपुर, उत्तर प्रदेश-208002

[2]गोविंद वल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर, उत्तराखण्ड – 263145

[3]मोनाड विश्वविद्यालय, हापुड़ उत्तर प्रदेश

***Received:* January, 2023; *Revised:* February, 2023 *Accepted:* February, 2023**

उत्तर प्रदेश में मुख्य रूप से धान, मक्का, ज्वार, बाजरा, अरहर, उर्द, मूंग, मूंगफली अथवा गन्ना आदि फसलें बोई जाती हैं । इनमें रबी की अपेक्षा उर्वरकों का कम प्रयोग तथा अधिक कीट व बीमारियों के प्रकोप एवं वर्षा अनियमित होने से इनके उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है । खरीफ की फसलों से अधिक उत्पादन लेने के लिए अच्छे बीज, संतुलित उर्वरक, जल निकास का उचित प्रबन्ध, सिंचाई प्रबन्ध, फसल सुरक्षा आदि पर ध्यान देना अत्यन्त आवश्यक है जिसके लिए निम्न सुझावों को ध्यान में रखते हुए यदि खेती की जाए तो अधिक उपज प्राप्त की जा सकती है ।

सघन कृषि विधियां अपनाने हेतु सामान्य सुझाव

1. प्रत्येक फसल की बुवाई से पहले उसके लिए भूमि को उसकी आवश्यकतानुसार तैयार करना आवश्यक होता है ।
2. जिन क्षेत्रों में दीमक के प्रकोप की सम्भावना रहती हो वहां भूमि उपचार करना न भूलें ।
3. धान, गेहूं, अथवा मक्का गेहूं फसल चक्रों में या अन्य किसी फसल जिससे जिन्क के अभाव के लक्षण दिखाई पड़ते हों ए उसमें बुवाई से पहले जिन्क सल्फेट का प्रयोग अवश्य करें ।
4. विभिन्न फसलों की स्वीकृत जातियों की ही बुवाई करें ए जिससे पैदावार प्रति इकाई क्षेत्र अधिक प्राप्त हो सके ।
5. समय से बुवाई हेतु बीज की मात्रा दी गई दर से प्रयोग करें यदि पहले या बाद में बुवाई करनी हो तो बीज की मात्रा सवाई कर देनी चाहिए ।

e-ISSN No. 2583-0937

6. बीज बोने से पहले बीज को शोधित करना न भूलें।
7. एन. पी. के. 12:32:16 की सम्पूर्ण मात्रा बुवाई के समय कूड़ों में ड्रिल या पोरा द्वारा प्रयोग करने से अधिक लाभ प्राप्त होगा। धान के खेत में रोपाई से पहले लेवा लगाते समय एन. पी. के. 12:32:16 के कुल मात्रा पानी भरे खेत में डालकर पाटा लगाकर रोपाई करें।
8. यूरिया की कुल दी जाने वाली मात्रा को आवश्यकतानुसार पहले और दूसरे पानी के बाद खड़ी फसल में बाल बनने से पूर्व छिड़ककर प्रयोग करें।
9. यूरिया खड़ी फसल में सायंकाल ही प्रयोग करना अधिक उपयोगी है।
10. यदि धान के खेत में पानी भरा हो तो एक भाग यूरिया को पांच भाग नम मिट्टी में मिलाकर 48 घंटे के लिए छाया में रख दें उसके बाद इसे पानी भरे खेत में प्रयोग कर यूरिया का भरपूर लाभ उठायें।
11. बरसात में प्रायः फसलों को सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती है ए लेकिन कभी . कभी वर्षा के अभाव में फसल की पत्तियां सिकुड़ने लगती हैं ऐसी स्थिति में सिंचाई अवश्य करनी चाहिए।
12. भूमि में नमी के संरक्षण हेतु उसकी खुरपी द्वारा निराई कराना आवश्यक है। इससे खरपतवार नष्ट हो जाते हैं जिससे फसल को दी गई उर्वरक की पूर्ण मात्रा का लाभ होता है व उसे फेलने के लिए पर्याप्त स्थान प्राप्त हो जाता है।
13. किसी भी दशा में फसलों में रोग व कीट लगने पर उनकी रोकथाम हेतु कीटनाशक व फफूदी नाशक दवाओं का प्रयोग करना न भूलें।
14. प्रत्येक फसल की सही समय पर कटाई अवश्य कर लेनी चाहिए ए ताकि अगली फसल की बुवाई में देरी न हो। फसल की पहले या देर से कटाई करने पर पैदावार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
15. क्षारीय भूमि में मृदा सुधारक प्रयोग करने के बाद धान की फसल लेना लाभदायक होता है। ऐसी भूमि में दलहनी फसलें नहीं बोनी चाहिए।
16. दलहनी फसलों को उनके राईजोवियम कल्चर से उपचारित करके बोने से अधिक लाभ मिलता है।
17. दलहनी फसलों में अरहर की दो पंक्तियों के बीच ए मूंग या उर्द की दो पंक्तियां बोकर भी अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है।
18. गन्ने की बसन्त कालीन फसल में दो पंक्तियों के बीच ए मूंग अथवा उर्द की दो पंक्तियां बोकर भी अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है।
19. 15 जुलाई के बाद केवल साकेत 4 ऐसी प्रजाति है जो 31 जुलाई तक रोपाई करने पर भी अच्छी पैदावार होती है। देर से रोपाई करने पर 3 पौधे एक स्थान पर लगाए जाय तथा पंक्ति से पंक्ति की .
20. ऊसर क्षेत्रों में धान की रोपाई के लिए पौध की उम्र 35 दिन हो तथा एक पौधे से पौधे का फासला भी 15 सेण्मीण् रखे तथा एक स्थान पर 4 पौध लगाई जाये पंक्ति से पंक्ति की दूरी 15 सेण्मीण् रखी जाय तथा पौध उत्तम स्थान पर तैयार की जाये।
21. अगेती धान की रोपाई अधिक से अधिक क्षेत्र में की जाये।
22. संकर बाजरा की बुवाई 25 जुलाई से पूर्व करने पर वर्षा के कारण पराग धुलने के प्रकोप की अधिक आशंका रहती है।